

# Sarvajanik Karyakram

Date : 22nd March 1979  
Place : Mumbai  
Type : Public Program  
Speech : Hindi  
Language

## CONTENTS

### I Transcript

Hindi	02 - 09
English	-
Marathi	-

### II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	-

# ORIGINAL TRANSCRIPT

## HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

आप एक बहुत सुन्दर प्रकृति की रचना हैं। बहुत मेहनत से, नजाकत के साथ, अत्यंत प्रेम के साथ परमात्मा ने आप को बनाया है। आप एक बहुत विशेष अनन्त योनियों में से घटित होकर इस मानव रूप में स्थित हैं। आप इसलिए इसकी महानता नहीं जान पाते क्योंकि, ये सब आपको सहज में ही प्राप्त हुआ है। यदि इसके लिए मुश्किलें करनी पड़ती, आफते उठानी पड़ती और आप इसको अपनी चेतना में जानते तो आप समझ पाते कि आप कितनी महत्वपूर्ण चीज हैं। मनुष्य को जानना चाहिए कि परमात्मा ने हमें क्यों बनाया, इतनी मेहनत क्यों की? हम किस लिए संसार में आये और हमारा भविष्य क्या है? हमारा अर्थ क्या है? जैसा कि कल मैने कहा था कि अगर हम मशीन बनायें पर इसको इस्तेमाल नहीं करें तो कोई भी अर्थ नहीं मिलता। लेकिन जब तक ये मेन स्रोत से नहीं लगाया जाता तब तक आप इसका उपयोग भी नहीं कर सकते। उसी प्रकार जब तक आप उस अनन्त स्रोत के साथ संबन्धित नहीं होते जिसके बारे में अनेक साधु संतों ने वर्णन किया हुआ है, अनेक पुस्तकों में आपने जिसके बारे में सुना होगा कि अनन्त शक्ति परमात्मा की सर्वव्यापी है और वो हर एक चीज का काम, हर एक चीज का संचालन, हर एक वस्तु की गति संभालती है। यह सुनी समझी हुई बात दूर की लगती है। जब तक आप उससे संबंधित नहीं होते, तब तक यह समझ में आने वाली नहीं।

जैसा कि कल मैने कहा था कि आत्मा को जाने बगैर आप परमात्मा को जान ही नहीं सकते। ये तो ऐसे ही हुआ कि टेलीफोन का तार लगा नहीं और आप टेलीफोन इस्तेमाल करें। जो कुछ धर्म के नाम पर आप करते रहे हैं वो इसी तरह का अन्धा-धुन्ध काम है। ये आपको समझ आ जायेगा एक बार सम्बन्ध जुड़ने के बाद। उससे पहले ये प्रश्न बना रहेगा। अब हम क्या हैं? हमारे अन्दर कौन-कौन सी व्यवस्था परमात्मा ने की है और किस मशीन के कारण, किस तंत्र के कारण उस को प्राप्त होंगे, इसके बारे में मैं आपको बताना चाहती हूँ। ये विषय बहुत ही कलिष्ठ हैं। वास्तव में ये विषय तब बताना चाहिए, जबकि आप पार हो जाएं। जिस वक्त संबंध हो जाए। माना की आप अंधे हैं और मैं बताऊँ कि ऐसा बना है, ये लाइट है, यहां पर इस तरह का रंग लगा हुआ है, वातावरण बड़ा सुन्दर है। और यह बहुत अच्छा लगता है, तो आप यह कहेंगे कि हमारे पास

तो आखें हैं नहीं हम इसे कैसे जानेंगे और हमारे लिए भी यह समझाना बहुत ही कलिष्ठ होगा जैसा कि इस कमरे की बत्ती अगर जलानी है तो आप एक बटन दबाएं। और बत्ती जल जाएगी। इस प्रकार आपके अन्दर भी कोई चीज ऐसी ही बनी हुई है। पूरी तरह से तैयारी कर परमात्मा ने रखी हुई है। उसको जगाना मात्र है। जब आप आलौकिक हो जाते हैं तो सारी की सारी चीज आपको आसानी से समझ आ जाती है। पर अगर बत्ती जलाने से पहले ही मैं ये लव-र देना शुरू करूँ कि ये बत्ती कैसे आई बिजली कहां से आई, इसका इतिहास क्या है, कैसे बना, तो सब कुछ गड़बड़ हो जाता है। लेकिन आधुनिक मानव को सरदर्द की आदत है वो चाहता है पहले सिरदर्द हो फिर उसको हटाए। उनको कोई चीज आसानी से मिल जाए तो बड़े आश्चर्य से पूछता है हमने तो कुण्डलिनी के बारे में पढ़ा है कि वो बड़ी मुश्किल चीज है। वो तो हजारों वर्षों में होती है, वो तो बड़ी मुश्किल चीज है। उसमें आदमी को ये करना पड़ता है वो करना पड़ता है। तो हम इस पर यही कह सकते हैं कि हम इसके माहिर हैं हम इसे जानते हैं, कुछ विशेष बात हमारी हैं ही, जिसके कारण इसे आसानी से कर सकते हैं। बहुतों को हो चुका है। इतना ही नहीं, जब आपका भी अन्तर योग स्थापित हो जाएगा, जब आप भी इसे प्राप्त होंगे, तो आप भी दूसरों की जोत जला सकते हैं बहुत आसानी से। बहुत से लोगों को हमने देखा है। खासकर इस बंबई शहर में पार होने के बाद कोई प्रयत्न नहीं करते, कोई आगे नहीं बढ़ते हैं। बंबई शहर को एक तरह की जड़वात पकड़े हुए है। इसके बारे में हमने कहा था। आप भी बंबई शहर में रहते हैं इस लिए मैं आप से यह कहना चाहूँगी कि ये अति सूक्ष्म संवेदन है अति सूक्ष्म घटना है। यह घटित होना आपकी पूर्व सम्पदा का फल है। जन्म जन्मांतर की चीज आप पा रहे हैं। इसको आप समझ लें और इसमें गतिमान हों। ये नहीं की जहाँ के तहाँ पाया उसको ठप्प कर दिया। जब ऐसा होता है तब हम देखते हैं इसका फल बहुत ही कम मिलता है।

इसके अनेक फल हैं इनमें सबसे बड़ा फल ये है कि आपकी शारीरिक व्याधियां छूट जाती हैं क्योंकि आपके अन्दर परमात्मा का आलोक आने वाला है। आपकी आत्मा जागृत होने वाली है। तो ये शरीर का मंदिर भी निर्मल करना पड़ता है। आपमें अगर कुछ मानसिक बीमारी हो तो वो भी ठीक हो जाती है। आपकी



बुद्धि भी आलोकित होकर के आप सुबुद्धि प्राप्त करते हैं। और चौथी जो सबसे बड़ी चीज हो जाती है कि आपके अन्दर से आत्मा स्पन्दित होने लग जाती है। आप इसको चैतन्य के रूप में अपने हाथों में बहती महसूस करते हैं। इसको लहरियाँ कहते हैं। श्री शंकराचार्य ने इसे सौंदर्य लहरी कहा है। बाईबल में इसे शीतल लहरियाँ कहा है। इसको जब आप पाते हैं तो हाथों में बहुत ठंडी हवा चैतन्य की बहती है। लहरियों का अर्थ लोग सोचते हैं बदन हिलना या कुछ उसमें किसी तरह का झकझोर होना। तो यह गलत बात है। इसमें समझ लेना चाहिए लहरियाँ अर्थात् ठंडी-ठंडी हवा बहुत ही शीतल हवा इसमें अंदर में बड़ी ही शीतलता आती है। बहुत ही ज्यादा आर्शीवादित भावनाएँ अन्दर में पुलकित होती हैं। ये एक वास्तविकता है। साक्षात् है। वास्तविकरण है। ये कोई झूठी बात नहीं। यह कोई धोखा नहीं। इसमें वास्तविकता में आते हैं और ये चीज आपके अन्दर घटित होना अत्यावश्यक है। अगर ये चीज घटित नहीं हुई तो मनुष्य जहाँ का तहाँ रह जाएगा। किसी भी तरह से उस चीज को प्राप्त नहीं कर पाएगा जिसमें वो अर्थ देखे जिसमें वो समर्थ हो जाए।

आपके सामने कुण्डलिनी रखी है। इसका चित्र यहां बनाया हुआ है। वास्तविक कुण्डलिनी हमारे अन्दर परमात्मा ने बीज के रूप में रखी है जिसको अंकुर करना है। मैं बहुत संक्षिप्त में बताऊँगी। आपकी कुण्डलिनी की जागृति ही मुख्य बात है। बोलते-बोलते ही मैं आपकी कुण्डलिनी जागृत करती हूँ। आप कृपया अपने हाथ सीधे मेरी ओर कर लें। ये कुण्डलिनी आपके अन्दर बसी हुई है। ये घटना क्षण भर में होती है। तैयारियाँ उसकी करनी पड़ती हैं। ये कुण्डलिनी है जो कि अंकुररूप में आपके अन्दर त्रिकोणाकार अस्थि में स्थित है। ये शक्ति परमात्मा ने अंकुर रूप में स्थित की है। ये आपकी माँ है जो जन्म-जन्मान्तर तक आप के साथ रही है। और आपने आज तक जो भी किया, आपका सारा जो भव है, भूत है उसका सारा टेप इसमें लिखा हुआ है। सारा माइक्रो स्कोपिक टेप इसमें लिखा हुआ है। आप इसको ठहरा नहीं सकते और यह नोट करती जाती है कि आप की क्या सम्पदाएँ हैं। आपने क्या गलतियाँ की हैं, क्या अच्छाईयाँ की, क्या आपमें गुण हैं और क्या दुर्गुण हैं। यह त्रिकोणाकार अस्थि में अत्यंत पवित्र आपकी माँ है। और इसके नीचे गणेश जी का चक्र है। ये अपनी माँ गौरी जिसे हम कुण्डलिनी कहते हैं की रक्षा के लिए नीचे बैठे हैं यानि जो आदमी पवित्र नहीं वो कुण्डलिनी का कार्य नहीं कर सकते। केवल अत्यंत पवित्र आदमी को ही अधिकार होता है कि वह कुण्डलिनी का कार्य करे। ऐसा आदमी जब भी कुण्डलिनी का काम करता है तो उसे नाना प्रकार की बीमारियाँ हो जाती हैं क्योंकि यह

अनाधिकार चेष्टा है। आप गणेश स्वरूप हो जाते हैं जिस वक्त कुण्डलिनी जागृत हो जाती है। क्योंकि जब हाथ आपके मेरे ओर हैं तो बहता चैतन्य हाथ से गुजर के इन दोनों नाडियों से नीचे उतरता है और जाकर गणेश को खबर देता है कि अब कुण्डलिनी उठ सकती है। क्योंकि कुण्डलिनी वो चैतन्य है, वह स्थिति है, वो शक्ति है जो जानती है, जो प्यार करती है, जो आयोजन करती है और जो आपको जन्म देती है। वो आपकी जन्म दात्री है। इसी से आपका दूसरा जन्म होता है जिसमें आप द्विज हो जाते हैं। यह शक्ति अत्यंत पवित्र है अछूती है। इस तक कोई भी नहीं पहुंच पाता जब तक जो आदमी इसका अधिकारी है वो आपके सामने खड़ा न हो जाए। जब इसका अधिकारी इसके सामने खड़ा होता है तब आपके हाथों के द्वारा यह शक्ति अन्दर जाती है और कुण्डलिनी जागृत हो जाती है। यह अपने आप जागृत होती है। इसके लिए कोई भी मेहनत करने की जरूरत नहीं होती है क्योंकि ये जीवन्त क्रिया है। ये बिल्कुल जीवन्त क्रिया है। कोई भी जीवन्त कार्य मेहनत से नहीं होता वो अपने आप घटित होता है। उसी प्रकार कुण्डलिनी अपने आप जागृत होती है। सिर्फ इसे यह पता होना चाहिए कि इसके सामने वो इंसान खड़ा है जो उसका अधिकारी है।

कुण्डलिनी इसके बाद छः चक्रों को छेदती हुई ऊपर जाती है। उसमें से जो महत्वपूर्ण चक्र हैं वो नाभी चक्र हैं। हालांकि यह तीसरा चक्र माना जाता है पर कुण्डलिनी दूसरे चक्र को न छेदती हुई पहले तीसरे में जाती है क्योंकि दूसरा चक्र नाभी से निकल कर ऊपर धूमता रहता है दूसरे चक्र से भी शक्ति को खींचा जाता है। इसमें से चित्त को खींचा जाता है। दूसरा चक्र जो स्वाधिष्ठान है इसमें आपका चित्त है। इस चक्र से चित्त को खींचकर के कुण्डलिनी अपने ऊपर छा लेती है जैसा कि समझ लीजिए किसी कपड़े में ये मेरा हाथ चला गया हो। आपका जो चित्त है आपको आश्चर्य होगा, आपके पेट में रहता है आपके सर में नहीं रहता। चित्त पेट में रहता है लेकिन ज्ञात अपने मस्तिष्क से होता है। वो किस प्रकार? वह स्वाधिष्ठान चक्र की वजह से। ये मैं आपको बाद में बताऊँगी। ये चित्त जो है उसे ले कर कुण्डलिनी ऊपर उठती है। स्वाधिष्ठान चक्र हमारे कार्य करने का, आगे की बात सोचने का, विचार करने का केन्द्र है क्योंकि इसी केन्द्र से हमारे पेट में जो मेद है, जो फैट है उसे बदलकर दिमाग के लिए ठीक बनाया जाता है। यह इसी केन्द्र का काम है। इस चक्र से हमारा महाधमनी चक्र चलता है। ये चक्र आजकल बहुत कार्यशील है क्योंकि हम बहुत ज्यादा सोचते रहते हैं। हर समय सोचते रहते हैं। अति सोचने की वजह से हमारे जो दूसरे काम इस चक्र से होते हैं वो उपेक्षित हो जाते हैं। उनकी



तरफ हम ध्यान नहीं दे पाते। वो काम इस प्रकार है ये चक्र लिवर के ऊपर का हिस्सा, अग्नाशय, गुर्दा, गर्भाशय सबको संभालता है। जब हम बहुत अधिक सोचते हैं तो हमें ड्राईविटीज की बीमारी हो सकती है। क्योंकि हमारे एक ही चक्र है जो कि सोचता भी है और मेद भी बदलता है। वही चक्र हमारे अग्नाशय को सम्भालता है। अतः बहुत अधिक सोचने वाले लोगों को मधुमेह हो जाता है। किडनी की बीमारी भी अधिक सोचने से होती है। दूसरे कारण भी हो सकते हैं परन्तु मुख्य कारण अधिक सोच विचार है। अधिक सोच विचार से जिगर भी खराब हो जाता है। और गर्भाशय पर भी इसका बहुत असर आ जाता है।

अब आप कहेंगे कि मैं सोच विचार कैसे रोका जाए? मनुष्य हर समय सोचता ही रहता है उसका विचार एक क्षण भर भी नहीं रुक सकता और अगर वह रुक जाए तो यह आश्चर्य की बात है कि वो कैसे रुका है। आपको यही मैं दिखाऊँगी कि अभी थोड़ी देर में आपके सारे विचार एक दम रुक जाएंगे। आप देखिएगा आपको लगेगा कोई भी विचार मेरे दिमाग में नहीं आ रहा। विचार शांत हो गए हैं। ये जब आज्ञा चक्र को कुण्डलिनी लांघ जाती है तब यह घटित होता है। इसके बाद नाभी चक्र भी बहुत महत्वपूर्ण है। नाभी चक्र हमारी पाचन क्रिया पर निर्भर करता है।

नाभी चक्र हमारे धर्म को मानता है। मनुष्य का भी एक धर्म है। फिर उसको स्वतंत्रता है चाहे वह अपने धर्म में रहे या न रहे। बाकी संसार की किसी चीज में भी यह स्वतंत्रता नहीं। जैसे कि सोना है उसका अपना धर्म है कि वह खराब नहीं होता। बिच्छु का अपना धर्म है कि वह डंक मारता है, साँप का अपना धर्म है और शेर का अपना धर्म है। सब अपने अपने स्व धर्म में बैठे रहते हैं। परन्तु मनुष्य को यह स्वतंत्रता परमात्मा ने दी हुई है कि चाहे वह अपने धर्म में रहे या न रहे। बुराई को जीतना है तो जीत ले चाहे तो अच्छाई को जीत ले। ये स्वतंत्रता परमात्मा ने विशेष रूप से मनुष्य को क्यों दी? इसलिए दी है कि परमात्मा के साम्राज्य में यदि हमें जाना है तो पहले स्वतंत्रता में हम उसका वरण करें। अपनी स्वतंत्रता में ये कहें कि हमें परमात्मा चाहिए। हमारे ऊपर यदि जबरदस्ती करके कोई कहे कि परमात्मा को मांगिए तो ये कौन सा मांगना हुआ? इसलिए इस दशा में पहुंचने पर मनुष्य को अपनी स्वतंत्रता में ही परमतत्व को मांगना चाहिए। किसी जबरदस्ती की वजह से नहीं। किसी बीमारी की वजह से नहीं, किसी दुःख की वजह से नहीं, किसी तकलीफ की वजह से नहीं। बल्कि इसलिए कि यह परम पाना ही हमारे जीवन का मुख्य लक्ष्य है। इस स्वतंत्रता में जब आप जाते हैं और परम की इच्छा करते हैं तभी परमात्मा के महाद्वार आपके लिए खुलते

हैं।

इस धर्म के केन्द्र के चारों तरफ गुरुओं का स्थान है। ये दस गुरु हमारे अन्दर बसे हुए हैं। ये मुख्य दस गुरु हैं। ये दत्तात्रय के अवतरण हैं। जिनमें से हम कह सकते हैं सुक्रान्त, मोजेज, इब्राहम, मोहम्मद साहब, गुरुनानक अभी आपके जो शिरडी के साई नाथ हो गए ये सब एक ही तत्व के, एक ही व्यक्ति के, एक ही महत्ता अवतरण हैं। इनमें जरा सा भी अन्तर नहीं। मोहम्मद साहब में व गुरु नानक में इतना सा भी अन्तर नहीं। उन्होंने ही फिर से जन्म लिया क्योंकि मोहम्मद साहब ने जब देखा कि लोग इस तरह उनके धर्म का अपमान कर रहे हैं और धर्म को छोड़कर गलत चीजों में पड़े जा रहे हैं तो उन्होंने गुरु नानक साहब के रूप में जन्म लेकर उस चीज को ठीक करने की कोशिश की। दोनों ने एक ही कांश की कि सब एकता में रहें। पर आप जान ही रहे हैं कि उनका भी क्या हाल हुआ। स्वाधिष्ठान चक्र पर श्री ब्रह्मदेव का स्थान है और सरस्वती उनकी शक्ति है। नाभि चक्र पर श्री लक्ष्मी नारायण का स्थान है। अब लक्ष्मी जी के बारे में हमारे यहां बहुत ही विकृत कल्पनाएँ हैं। लक्ष्मी नारायण जी का स्थान जो है हमें धर्म के प्रति रूचि देता है। उसी के कारण हम धर्म परायण होते हैं। उसी से हम धर्मधारणा करते हैं यानि कार्बन में जो चार (वैलेन्सीज) संयोजकता है वे भी इसी धर्मधारणा की वजह से हैं। मनुष्य रूप में आपका जो विकास हुआ है वह भी इस लक्ष्मी नारायण के तत्व से हुआ है। विष्णु तत्व से ही यह कार्य होता है। जो लोग अपने को वैष्णव कहलाते हैं उनको जान लेना चाहिए कि जब तक उन्होंने आत्मा को पाया नहीं उनका वैष्णव धर्म अधूरा रह गया। ये हमारे अन्दर नाभी चक्र में बसते हैं। विष्णु जी ने अनेक अवतरण लिए हैं। शिवजी के अवतरण नहीं होते हैं। ब्रह्मदेव ने मात्र एक बार अवतरण लिया था जिसके बारे में कहें तो आपको आश्चर्य होगा कि उन्होंने एक बार हजरत अली के नाम से इस संसार में अवतरण लिया था। और यह सत्य है या नहीं ये आप लहरियों से देख सकते हैं। जिस वक्त किसी आदमी को मधुमेह की बीमारी हो जाती है तो आपको हजरत अली का नाम लेना पड़ता है, चाहे आप हिन्दू हों, चाहे मुसलमान हों, चाहे पारसी हों। क्योंकि उनका ही अवतरण वहां पर बैठा हुआ है और उन्हीं का नाम लेने से मधुमेह की बीमारी ठीक होती है। सहजयोग में हमने शत प्रतिशत मधुमेह ठीक किए हैं। शत प्रतिशत। और अब ये हैं कि डाक्टर लोग तो अब हजरत अली का नाम लेने के लिए कहेंगे नहीं। वो तो इस चीज के रहस्य को जानते ही नहीं, जिसके कारण हमारे जो चक्र चलते हैं। वो तो बाह्य में, जड़ में, ठोस में देखते हैं। सिर्फ ध्यान से ही आप अपने इस रहस्य को जान सकते हैं।



जिन गुरुओं ने इसको जाना है वो जानते हैं कि हमारे अन्दर पेट के बाएं भाग में स्वाधिष्ठान का जो स्थान है वहाँ पर आपको हजरत अली और फातिमा का नाम लेना पड़ता है। नाभी चक्र में जो विष्णु लक्ष्मी का स्थान है, इन्होंने आप जानते हैं कि दस अवतार . . . ए हैं उसमें से नौ ले चुके हैं दसवां आने वाला है। नौ अवतरणों . . . से उनके अधिकतर अवतार विकासशील हैं यानि वो पहले मछली के रूप में आये। आप जानते हैं कि जीव पहले समुद्र में हुआ था। उसके बाद मछली से कछुआ बन गया। इस प्रकार ये विकास की अलग-अलग अवस्थाएँ लक्ष्मी नारायण की विकासशीलता की द्योतक हैं। वो सब हमारे अन्दर बंधे हुए हैं। जो-जो संसार में होता आया है वो सारा इतिहास हर एक मानव में बना हुआ है और मानव इसलिए सबसे ऊँचा है क्योंकि इसकी दशा सबसे ऊँची है। बाकी जितनी भी अवस्थाएँ हैं वो मनुष्य से बहुत निम्न स्थिति में हैं। यानि आप अब समझ सकते हैं कि नाभी के चारों तरफ जो भव सागर फैला है उसमें से जानवर निकल नहीं पाये। सिर्फ मानव निकल पाया है। जबकि हमारे यहाँ वामना अवतार हुआ, उसके बाद परशुराम जी का अवतार हुआ, उसके बाद श्री राम जी का।

श्री राम जी का चक्र जो नाभी के ऊपर है उसे हृदय चक्र कहते हैं। श्री राम जी का स्थान हृदय चक्र के दायीं ओर में है। बीचोबीच में नहीं। जो सुषुम्ना नाड़ी है जिससे आपका विकास होता है उस पर इसलिए नहीं रखा क्योंकि श्री रामचन्द्र जी ने अपने को अवतार नहीं माना था। उन्होंने अपने को मर्यादा पुरुषोत्तम मान करके इस बीच से हटाकर अर्थात् उत्कान्ति के पद से हटा कर अपने को अलग कर लिया। ये आपके पिता का स्थान है। ये आपके पितृत्व का स्थान है। यदि किसी व्यक्ति ने अपने पिता को सताया हो, तकलीफ दी हो, तो ये चक्र पकड़ता है। अब डाक्टर लोग इसे मानते नहीं। इस चक्र पकड़ने से ही लोगों को ऐसी बीमारी होती है जिससे बहुत तेज श्वास चलने लग जाता है और किसी भी तरह से श्वास नहीं रुकता और लोग कहते हैं माताजी कि ये ला इलाज है। वर्षों से ठीक नहीं होती। पितृत्व का स्थान बिगड़ने के अनेक कारण होते हैं। जैसे आपके पिता की मृत्यु जल्दी हो गई। ऐसी उम्र में हो गई है जब आप बहुत ही छोटे थे, तो आपको आपकी फिक्र लगी रहती है। कोई मरता नहीं। आप ये तो जानते ही हैं। उनकी जीव-आत्मा आपकी आत्मा के पास मंडराती रहती है। उनकी जीव-आत्मा के कारण आपका ये दायां हृदय पकड़ा जाता है। आपको आश्चर्य होगा कि कितने लोगों की मैंने इस तरह की बीमारियाँ ठीक की हैं। उनसे कहा कि आप अपने पिता से कह दीजिए कि हम बिल्कुल ठीक हैं। आप फिक्र न करें और आप फिर

से जन्म लीजिए। ये बात कहने से ही उनका ये चक्र ठीक हो गया। उनकी ये बीमारी जो की सालों से हो चली आ रही थी, एक साहब को तो पच्चीस साल से चली आ रही थी। ये कहते ही ठीक हो गई, और उनको बड़ा ही आश्चर्य हुआ कि मैंने पाँच मिनट में ये ठीक कर दी। अगर आप इसके अन्दर के रहस्य समझ लें तो बीमारी ठीक करना कोई विशेष चीज नहीं है। अब ये चक्र खराब हो जाने से, मनुष्य को यह ध्यान में लाना चाहिए कि हो सकता है कि आप में कोई दोष हो। कुछ लोग होते हैं जो अपने बच्चे से बहुत दुष्टता से व्यवहार करते हैं और बच्चों को बुरी तरह से पीटते हैं, उनका खयाल नहीं रखते उनका पितृत्व पकड़ा जाता है। तब ये चक्र पकड़ा जाता है। हम लोग ऊपरी तरफ से इन्सान को देखते हैं यानि पूर्ण ढंग से नहीं देखते। मनुष्य केवल शरीर मात्र नहीं है। वो मन भी है, बुद्धि भी है, शरीर भी है, अहंकार भी है और आत्मा भी है। ये सारी चीजें मनुष्य है। जब तक पूर्ण चीज को आप न समझें, उसका संतुलन आप न समझे तब तक आप ये नहीं समझ पायेंगे कि ये बीमारी किसलिए है। इस चक्र की बाईं ओर हृदय अंग है। हृदय का जो स्थान है इसमें आत्मा का स्थान है। आत्मा आपके हृदय में विराजमान है। यही आपका साक्षी है, यही क्षेत्रज्ञ है। यह आपके बारे में सब कुछ जानता है लेकिन ये आपकी चेतना में नहीं है। माने ये कि आप ये तो जानते हैं कि कोई आपको जान रहा है लेकिन आप उसको कार्यान्वित नहीं करते। आपके अन्दर से स्पन्दित नहीं है। चिकित्सकों की भाषा में कहने का होगा कि आपका परा-अनुकम्पी तन्त्र आपके काबू में नहीं है। उसे रोग (आटोनोमस) स्वयं चालित नाड़ी-तन्त्र भी कहते हैं।

लेकिन ये स्वयं क्या है? स्वयं कौन है? कौन आपके हृदय की गति को कम करता है? कौन आपकी धड़कती छाती को धीमा कर देता है? कौन आपके पेट में पाचन क्रिया करता है? ये जो स्वयं है वो आत्मा है। और वो आत्मा हमारे परा अनुकम्पी नाड़ी तन्त्र से चलता है लेकिन ये आत्मा हमारे चेतना में नहीं है। इसको मध्य नाड़ी तन्त्र पर लाते ही अनेक रोग ठीक हो जाते हैं। जैसे हृदय का विकार है, आजकल दिल का दौरा बहुत ही आम बात है। लेकिन दिल का दौरा क्यों आता है? मैंने कहा आपसे की हृदय में आत्मा का स्थान है। शिव का स्थान है यानि आत्मा जहाँ विराजती है वो शिव है। जब आदमी का ध्यान आत्मा से हटकर संसारिक कार्यों में लगता है। जो बहुत अधिक काम करता है, बहुत अधिक दौड़ता है, वो सोचता है वही दुनिया में एक स्रक्धारो मिला हुआ है। वो सारी दुनिया का भार लेकर चलता है। उसकी बाईं ओर कमजोर हो जाती है। उसका दिल कमजोर हो जाता है। उसका आत्मा क्षीण हो जाता



है। उससे शिव गुस्सा हो जाते हैं और जब शिव गुस्सा होते हैं तो दिल का दौरा हो जाता है। प्रकृति का भी एक नियम है। जब आदमी बहुत ज्यादा काम कर रहा हो, अपने शरीर को बहुत दौड़ा रहा हो, उसकी दाईं ओर पिंगला नाड़ी से बहुत काम ले रहा हो तो उस वक्त परमात्मा ही ये व्यवस्था करते हैं कि उसका कार्य रुक जाए, उसको दिल का दौरा हो जाता है। कोई आदमी बहुत कार्य करता है तो उसका अहंकर बंद जाता है ईड़ा नाड़ी से अहंकार बढ़ता है तो गुब्बारा बन जाता है। फिर उसको होश नहीं। एक आदमी आये, वो मेरे सामने कांप रहे थे। मैंने कहा आपका परमात्मा में विश्वास है। वो बोले नहीं मेरा तो नहीं है। तो मैंने कहा आपको किसने बनाया? ये सारी सृष्टि किसने बनाई? बड़ी आसानी से मनुष्य कहता है हमारा परमात्मा में विश्वास ही नहीं। यह बहुत बड़ी अहंकारिता है। नास्तिक लोगों को अधिकतर पार्किन्सन की बीमारी होती है। कारण ये है कि उनकी आत्मा क्षीण हो जाती है। वो धर-धर काँपने लगते हैं। मतलब ये है आप समझ लीजिए आप हाल में बैठे हैं अगर आप ये सोच रहे हैं कि हाल का बोझ कम करने के लिए कुछ कुर्सियां सर पर उठा ले तो आपको लोग क्या कहेंगे? कि अगर आप किसी वायुयान में जा रहे हैं और आप यह सोचें कि बोझ सर पर उठा ले इसके लिए हम कुछ चीज सर पर रख लें। उसी प्रकार आप अपने सर पर बेकार के बोझे ढो रहे हैं। सब कार्य करने वाला परमात्मा है। एक पत्ता भी उसके कहे बगैर नहीं हिल सकता। सही है या नहीं है? ये सिवाय आत्म साक्षात्कार के जान नहीं सकते। आपको लगेगा माताजी यूँ ही कह रही हैं। आपको आश्चर्य होगा की उसकी शक्ति कितनी प्रगल्भ है। कितनी सूक्ष्म है? कितनी गहन है? कितनी प्रेममय है? पहले उसके साम्राज्य में आना तो चाहिए। जब तक आप हिन्दुस्तान के नागरिक नहीं हुए आप क्या जानिएगा कि हिन्दुस्तान के नागरिक कैसे हैं और उनकी सरकार कैसी है? लेकिन परमात्मा के साम्राज्य में देखेंगे कि इससे ज्यादा कार्यकुशल तो कोई है ही नहीं। जो परमात्मा की है उसमें आपको आना मात्र है। देखिएगा किस प्रकार आपका स्वागत होता है। सारी सामूहिक शक्तियां जिसकी वजह से न जाने कितने ही लोगों को ठीक कर सकते हैं। न जाने कितने ही लोगों को पार कर सकते हैं न जाने कब तक चैन की ब्रैसी बजा सकते हैं। जितने भी वर्णित देवदूत हैं, जैसे कि हनुमान, भैरवनाथ, गणेश जी, इन सबकी आपको सहायता मिलती रहती है। आप के कार्य इस प्रकार सुगठित होते रहते हैं कि अगर किसी सहजयोगी से बात करें तो आपको आश्चर्य होगा कोई आदमी जो एक भी रुपया नहीं कमा सकता था वो भी बहुत रुपया कमाने लग जाता है। लेकिन कोई भी

सहजयोग में बहुत नहीं होता। अति बहुत गड़-बड़ होता है। कोई यदि अति विद्वान हो तो पार नहीं हो सकता। कोई अति श्री मन्त हो तो पार नहीं होगा। क्योंकि अति में जो दो नाड़ियां हैं ईड़ा और पिंगला उन्हीं में घूमते रहते हैं। कुण्डलिनी जो है बीच में चलती है। मनुष्य को बीच में रहना चाहिए। मध्य मार्ग में रहना चाहिए। कोई भी अतिशयता करने से आपको हमेशा दुःख होंगे। आप पागल भी हो सकते हैं। किसी भी अति पर उतरने की जरूरत नहीं है। यदि आप बीचोंबीच हैं तो आपके लिए आत्म साक्षात्कार का पाना बहुत आसान है। यदि आप सर्व सामान्य हैं तो ठीक है लेकिन यदि आप बड़े आदमी हैं, अति में हैं तो हम आपको नमस्कार करते हैं। आप सफल इसमें हों उसमें नहीं। मनुष्य को बीचों-बीच होना चाहिए, उसकी सारी गति बीचों-बीच हो। अब जो बीच में हृदय चक्र है ये बहुत महत्वपूर्ण है। इसे भी समझ लेना चाहिये। इस चक्र में जगदम्बा का स्थान है। जगदम्बा जब हमारे अन्दर हिल जाती है तो हमारे अन्दर असुरक्षा की भावना आ जाती है। जब वह सुप्त हो जाती है तो हमारे अन्दर घड़कन आ जाती है। औरतों में तब स्तन कैंसर हो जाता है। यह जो भी हम अतिशयता करते हैं उसकी वजह से ही कैंसर हो जाता है। अगर मनुष्य मध्य में रहे तो उसे कैंसर की बीमारी नहीं हो सकती। ये दो नाड़ियां ईड़ा व पिंगला है इसके अतिचालन के कारण कैंसर होता है। यदि मनुष्य मध्य में रहे और सब परमात्मा पर छोड़कर के कार्यान्वित रहे तो उसे कभी भी कैंसर की बीमारी नहीं होती। कैंसर की बीमारी सहजयोग से ही ठीक होगी और किसी चीज से ठीक हो ही नहीं सकती। क्योंकि सहजयोग से ही आप अपने आत्मा को प्राप्त करते हैं। और अपने परा अनुकम्पी नाड़ी तंत्र जो बीचों-बीच है, जो इन दोनों प्रणालियों को प्लावित करती है। बायां और दायां अनुकम्पी नाड़ी तंत्र की गति चलती रहती है। इसके बीच में चक्र है और उसके अन्दर देवता हैं। ये जब बहुत ज्यादा चलने लग जाती है तो ये हट जाती है। जब ये दोनों हट जाती हैं तो निरंकुश हो जाती है। जब निरंकुश हो गए तो जैसा चाहे वैसा बढ़ने लग जाते हैं। ये विषालुता आदमी के अन्दर आ जाती है। और इस विषालुता के आने के कारण ही मनुष्य में कैंसर की बीमारी हो जाती है। मनुष्य किसी तरह से इसके अन्दर यदि चैतन्य दे दे, इसके अन्दर के देवता जागृत कर दें तो फिर वही स्थिति आ सकती है और ये बीमारी एक दम ठीक हो सकती है। आज ही हमारे पास एक कैंसर के मरीज आए थे उनका एक भाग तो डाक्टरों ने खत्म ही कर दी थी क्योंकि डाक्टर के पास तो ये काट डालो, आँख काट डालो, सर निकाल डालो और फिर न जाने क्या-क्या कर दो। ये कैंसर को ठीक करने का तरीका नहीं। आज ही आए



थे। एक दिन के अन्दर उनमें फर्क आ गया। आप कहेंगे कि माँ ये कैसे हो गया। बिल्कुल सीधी सी चीज है इतनी कठिन बात है ही नहीं क्योंकि ये लोग मशीनरी जानते ही नहीं और बगैर जाने आप ठिठुर-पिठुर करते रहिए तो खराबी के सिवा करिएगा क्या? अगर डाक्टरों से कहा जाए कि आप इस मशीनरी को समझें इसे जाने कि ये क्या है तो वो कहते हैं कि आप लिस्ट दीजिए बनाकर जिन्हें आपने ठीक किया है। तो मैं यहां कोई फाइल रखती हूँ? जो भी आता है वो अगर गंगा के किनारे आ जाए तो ठीक है। ये तो प्यार का खेल है। हम कोई पैसा बनाने के लिये थोड़ा ही बैठे हैं। पैसा बनाने वाले न तो इसे कभी समझेंगे और न ही समझ पाए हैं। चैतन्य तो बह रहा है। प्यार बहता रहता है। देते रहते हैं, देते ही रहते हैं और इसी में आनन्द आता है। ये प्यार जब अन्दर जाता है, तो कार्यान्वित होता है। ये सारी सृष्टि ही प्रेम और चैतन्य से चल रही है। परमात्मा को अनुकम्पा और उनकी क्षमा शीलता से चल रही है। नहीं तो हम लोगों ने इतनी गलतियाँ की हैं, इतनी गलतियाँ की हैं कि हम लोगों को वास्तविकता में परमात्मा के बड़े ही अनुग्रहित होना चाहिये। उनको बहुत ही ज्यादा हमको मानना चाहिये कि उन्होंने हमें हमेशा माफ किया है। यहां तक की कितने ही लोग हमें परमात्मा को मानने वाले मिलेंगे। बहुत कम लोग हैं जो परमात्मा को मानते भी है या उनके ऊपर चित्त भी देते हैं। ये बीच के चक्र पकड़ने की वजह से मनुष्य में जो बीमारियाँ हैं उनमें से सबसे बड़ी बीमारी है स्तन कैसर। जिन औरतों को असुरक्षा की भावना आ जाए, जिनको लगे कि उनके पति गलत रास्ते पर चल रहे हैं। आजकल तो इस मामले में आदमियों से कह भी नहीं सकते और औरतें भी उसी रास्ते पर चल रही हैं। मैंने पहले ही कहा था कि पवित्रता जीवन का सबसे बड़ा ध्येय है। जिस आदमी में पवित्रता नहीं है वो संसार में कुछ भी नहीं कर सकता। वो कुछ भी करता है तो उसके मरने के बाद सभी कहते हैं अरे था तो क्या था, ऐसा गन्दा आदमी था। लोग उसके बारे में किताबें छपवाते हैं और कहते हैं होंगे बड़े भारी होंगे, बड़ी लड़ाईयाँ लड़ी होंगी। लेकिन आदमी गन्दा था। संसार में लोगों ने ऐसे आदमी को सामूहिक रूप से कभी भी महत्ता नहीं दी।

उसके ऊपर भी जो चक्र है वह बहुत महत्वपूर्ण है और मनुष्य के लिये तो बहुत ही महत्वपूर्ण है। जब मनुष्य ने अपनी गर्दन पूरी तरह ऊपर उठा ली तो ये चक्र पूरी तरह प्रकाशित हुआ। ये चक्र है विराट चक्र। ये चक्र है श्री कृष्ण का। विराट का मतलब ये है कि जब मनुष्य ने गर्दन उठाई तो जाना की मैं एक बड़े भारी विराट का एक अंग प्रत्यंग हूँ। मैं एक सागर में बसी हुई एक बूंद हूँ। एक पुरातन अस्तित्व का मैं एक हिस्सा हूँ। ये श्री कृष्ण

के अवतरण में घटित हुआ है। इसलिये मनुष्य उस विराट के बारे में सोचने लगा। उस परमात्मा के बारे में सोचने लगा जिसमें उसने अन्तरनिहित होना है, जिसमें उसने समाना है। जब आप उसमें समा जाते हैं और जब ये बूंद सागर हो जाती है तो सागर की सारी शक्तियाँ उसमें चलायमान हो जाती हैं और वह स्वयं देखता है कि वह सामूहिक चेतना में जागृत होता है। ये नहीं की हम भाषण दें, आप सब भाई बहन हैं। इसकी कोई अहमियत नहीं है। उसके बाद आप हो ही जाएंगे। जब आप शरीर के अंग-प्रत्यंग हैं, समझ लीजिए जब हम आपकी बीमारी ठीक करते हैं, मतलब हमारे हाथ से ये घटना हो जाती है तो इसमें हमारा क्या? क्योंकि आप हमारे ही तो अंग-प्रत्यंग हैं। समझ लीजिए हमारे हाथ पर चोट आई है अगर हम उसे ठीक कर रहे हैं तो ये कोई आपके ऊपर अहसान या उपकार नहीं कर रहे। ये तो हम अपनी अंगुलियों को ठीक कर रहे हैं। जब लोग दान के नाम के विचार से कार्य करते हैं, उसका परमात्मा से सम्बन्ध रखते हैं तो उनकी कुण्डलिनी जागृत नहीं हो सकती। जितने भी बड़े मिशन वाले तथा दानी लोग हैं उनकी कुण्डलिनी जागृत नहीं होती क्योंकि वह गलतफहमी में बैठे हैं। ठीक है आपको किसी गरीब की मदद करना है वो आप इसलिये कर रहे हैं क्योंकि आपके अन्दर कोई रो रहा है। क्योंकि वह गरीब जो आपको लग रहा है वह आपके अन्दर आपके वैभव को चुनौती दे रहा है। इसलिये आप उस गरीब की मदद कर रहे हैं। अगर आप तन्दरुस्त हैं और किसी बीमार को तीमारदारी कर रहे हैं तो इसलिये कर रहे हैं क्योंकि आपकी तन्दरुस्ती में भी ऐसी कोई चीज है जो आपको खींच रही है उस बीमार की सेवा के लिये। इसलिये जो लोग कहते हैं कि हम बहुत दानवीर हैं तो ये बहुत अहंकार की बात है। जो इन्सान अपने को समझता है कि मैं अपनी खुशी के लिये कर रहा हूँ ये मेरा सुख है ये मेरा आनन्द है इसलिये मैं कर रहा हूँ, क्योंकि ये चीज मुझे काट रही है, मुझे दुख पहुंचा रही है इसलिए मैं कर रहा हूँ। जो आदमी इस तरह सोचकर कार्य करता है उसकी कुण्डलिनी बहुत आसानी से जागृत हो जाती है। इसलिए हमने देखा इसका संबंध परमात्मा से जोड़ने की कोई जरूरत नहीं। ये आपकी निजी चीज है। क्योंकि आपके अन्दर ये संवेदना है, आप इसे कर रहे हैं इसलिए ये घटित हो रही है। बहुत से लोग इसका मिशन बनाते हैं भगवान से संबंध जोड़ेंगे। भगवान से संबंध नहीं सिर्फ आत्मा से ही होता है। जितने भी लोग परमात्मा का काम कर रहे हैं उन्हें जान लेना चाहिए कि परमात्मा का काम एक ही है कि मनुष्य का संबंध परमात्मा से जोड़ दे। आत्मा का संबंध परमात्मा से जोड़ना ही एक मात्र कार्य है जो परमात्मा के नाम पर करना चाहिए। बाकी



जो कार्य है वो लौकिक है। कंबल इकट्ठे करना, कंबल बांटना। कपड़े इकट्ठे करना कपड़े बांटना। ये कार्य परमात्मा का नहीं। ये सब लौकिक कार्य है, भौतिक कार्य है। परमात्मा का इससे कोई सम्बन्ध नहीं। इस चक्र में, विशुद्धि चक्र में 16000 नाड़ियाँ होती हैं। खुद ही सोच लीजिए कितना महत्वपूर्ण चक्र है। आपकी 16000 नाड़ियाँ इस चक्र से चलती हैं। अब जब आप सिगरेट पीते हैं तो आप इस चक्र को सताते हैं। अपने पीछे डंडा लेकर क्यों पड़े हैं कि आ बैल मुझे मार। और उसके लिए पैसे भी दो। आप जानते ही नहीं कि सिगरेट पीने से अधिक नुकसान अन्दर हो जाता है। आपको इसका अन्दाजा ही नहीं। लोग कहते हैं इससे कैंसर हो जाता है। सिर्फ कैंसर ही हो जाए तो बात दूसरी है। पर आपका पुर्नजन्म होने का अवसर भी काफी हद तक खत्म हो जाता है। अगर आप बहुत अधिक सिगरेट पीते हैं तो ये चक्र बुरी तरह से पकड़ा जाता है। सहजयोग में पता नहीं कैसे सब चीजें क्षमा हो जाती हैं? यदि आप सिगरेट भी पी रहे हैं तो भी आप पार हो जाएंगे। एक साहब बहुत ज्यादा सिगरेट पीते थे। वो पार हो गए तो उनके अन्दर से बहुत धुआँ निकला और उसके बाद बहुत सुगन्ध आई। उसके बाद जब भी वे सिगरेट पीने जाते थे तो उनको सुगन्ध आती थी। फिर उन्होंने सिगरेट पीना ही छोड़ दिया। वैसे भी सिगरेट व शराब देने ही मनुष्य इसलिए पीता है क्योंकि वह अपने से ही भागना चाहता है। एक ये पलायन है। अपने से भागना, अपने को मनुष्य देखना नहीं चाहता। क्योंकि अपना जो इतना सुन्दर है वो तो सारा बंद है। वो तो जाना नहीं। जब वो अपने को जान लेता है तब उसको इच्छा ही नहीं रहती क्योंकि अपने ही मजे में वह बैठा रहता है। उसको लालच ही नहीं होता। क्योंकि इतना मधुर स्वाद जब आने लगता है तो मनुष्य उसे अपने आप ही छोड़ देता है। इसलिए सहजयोग में कोई भी शंका नहीं होती अपने आप ही ये घटना घटित होती है। लंदन में तीन सौ लोग हैं जो बुरी तरह से नशा लेते हैं और सबने पार होने के बाद अपने आप नशे छोड़े। बिल्कुल पूरी तरह से छोड़ दिये। परन्तु एक बात है हमारे हिन्दुस्तान में जो लोग हैं योगभूमि में पैदा हुए हैं। इनके ऊपर बहुत से वरदान अपने ही आप मिल गए हैं। पूर्व जन्म की सम्पदाओं के कारण आप हिन्दुस्तान में पैदा हुए हैं और इसलिए आप धार्मिक भी बहुत हैं। आप अबोध भी बहुत हैं। बहुत गुण आपके अन्दर हैं। लेकिन आपमें एक दोष बहुत बड़ा है कि जो चीज आपको आसानी से मिल जाती है उसकी महत्ता आपमें जरा भी नहीं है। आपको आश्चर्य होगा कि लंदन में मेरे प्रोग्राम में, जो हर हफ्ते होता है, इतनी भीड़ रहती है कि जरा भी जगह नहीं रहती। और इससे बड़ा ही हाल होगा छोटा नहीं। और लोग इस लगन से लगे हुए

हैं कि एक बार पार करने के बाद सारा देवी महात्म्य पढ़ डाला, आदिशंकराचार्य को पढ़ डाला। बाइबल में ढूँढ़ निकाला कि कुण्डलिनी क्या है। आज भी 300 आदमी भारत आना चाहते थे। पर यहां कोई व्यवस्था ही नहीं थी। तो भी पंद्रह बीस आदमी खुद अपना खर्चा करके आये हैं और हर एक जगह जहाँ हम जाते हैं वहां सहजयोग कैसे कार्यान्वित है उसे देखते हैं। आपको आश्चर्य होगा कि हमारे ग्रामों में हजारों लोग खटाखट पार हो जाते हैं। लेकिन आपके बंबई शहर में तो कमाल है कि यहां लोग पार होते भी हैं फिर भी टिकते नहीं। यहां पर सहजयोग सबसे ढोला, सबसे धीमा और सबसे छोटा रह गया है। न जाने क्यों कल भी मैंने कहा कि नौ सालों से मैं यहा जन्मदिन मनाती हूं। हालांकि दिल्ली में बहुत काम हुआ। यहां से कितने ही ज्यादा लोग वहां पार हो गये। वहां मैं केवल तीन साल से ही कार्य कर रही हूं। शायद बंबई शहर के लोग जड़ता में बैठे हैं। इनकी पकड़ उन पर आ गई है, या तो पश्चिमी देशों का प्रभाव इतना हो गया है कि यहां के लोग बहुत ही मुश्किल में जमते हैं। सहजयोग में पाना आसान है... जमना मुश्किल। हिन्दुस्तानी लोग बहुत जल्दी पार हो जाते हैं। पर एक एक विदेशी पर आठ-आठ दिन मेहनत करनी पड़ती है। लेकिन जब वो पार हो जाता है तो मुझे लगता है कि कुछ फायदा हुआ। क्योंकि ये जमने वाले हैं। लेकिन हिन्दुस्तानी चाहे हजारों पार हो जाएं तो भी व्यर्थ है क्योंकि इनको किसी भी चीज की कदर नहीं है। अपनी भी जिन्हें कदर नहीं है उनसे फिर क्या कहा जाए? इसलिये मैं आपसे विनति करती हूं कि यदि आप पार हो जाएं तो आप इसे पा ले और इसे आगे बढ़ायें। यहां हमारे केन्द्र हैं। वहां जाएं लेकिन लोगों को जब तक हाल याशान दार चीज न हो, लोगों को इतना अहंकार है कि छोटी जगह वो जाना ही नहीं चाहते। ये बड़ी दुख की बात है। जबकि पहले लोग अपने को पाने के लिये जंगलों में जाते थे। कहां-कहां घूमते थे। परन्तु अब जब आपके घर में गंगा बह कर आई है तो इसका सम्मान करना चाहिये। समझना चाहिये कि कितनी अलग सौ चीज हमें मिली है। अमूल्य चीज हमें मिली है हमें इसे बहाना चाहिये। बात-बात में खोना अच्छी बात नहीं है। इस तरह आपको क्या फायदा होने वाला है? लेकिन जो चीज आपने पायी है वो आपने अनन्त की तपस्या से पाई है। उसे खोकर के यही कहा जाएगा कि आपके लिये कौन सा स्थान रह जाएगा। न तो आप नर्क में जा सकते हैं और न स्वर्ग में। आपके लिये कोई भी स्थान परमात्मा को समझ नहीं आएगा कि ऐसे अकलमंद इन्सान के लिये कौन सा स्थान बनाया जाए! आपसे विनती है कि आज अगर आप इसे पा भी ले तो इसे बढ़ायें। हमारे केन्द्र में से किताब ले जाए। वो आपको इसके बारे में समझा देंगे। इसे



समझकर इसमें गतिमान हों।

जब विशुद्धि चक्र को कुण्डलिनी लांघ जाती है तो आज्ञा चक्र पर आती है। आज्ञा जो है यह जहां हमारी दृक-तन्त्रिकाएं एक दूसरे को लांघ जाती हैं वहां बड़ा सूक्ष्म चक्र है। यही हमारे पीयूषकाय (Pituitary) और शंकरुप (Pineal) ग्रन्थियों को भी नियन्त्रित करता है। इसी से हमारी आँख पर भी असर आता है क्योंकि दृक तन्त्रिका भी वहाँ से आती है।

जिनका आज्ञा चक्र खराब हो जाता है उनकी बुद्धि भट्ट हो सकती है। पागल आदमी का आज्ञा चक्र खराब होता है। आज्ञा चक्र खराब होने से आदमी अहंकारी भी हो सकता है। या एक दम उसकी स्थिति बहुत ज्यादा गिर भी सकती है। जब ये चक्र पोछे की तरफ से खराब होता है जिसे हम प्रतिअहं कहते हैं, यानि ऐसी बीमारियों से प्लावित होता है जिसमें कि उसे तन्हा आ जाती है। और सोते ही रहता है हर समय सोते ही रहता है। एक बीमार सा बन जाता है। उसे कोई भी काम करने की इच्छा नहीं होती। और जब सामने का चक्र पकड़ता है तो व्यक्ति बहुत ही महत्वाकांक्षी हो जाता है और अनेक तरह के कार्य करने लगता है और अपने मद में किसी को नहीं मानता। उसे लगता है कि मैं ही दुनिया का सब कुछ हूँ। इस तरह ये चक्र सन्तुलन को तोड़ देता है। ये चक्र जो है यहाँ गणेश जी का अवतरण है। ईसा मसीह का है। अब ईसा मसीह का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। देवी महात्म में महा विष्णु का वर्णन है। आप लोगों ने शायद पढ़ा होगा। महा विष्णु का जो वर्णन है वो बिल्कुल ईसा मसीह से मिलता है गणेश जी से किस तरह से महा विष्णु तत्व बनाया गया, यह आप पढ़ें। आप पढ़ेंगे तो पता चलेगा कि जो मैं कह रही हूँ एक-एक बात सही है। इस चक्र को जब कुण्डलिनी लांघ जाती है तो आप निर्विचार हो जाते हैं। एक दम निर्विचार हो जाते हैं। आप अपने ऊपर यदि चित्त दे तो आप अपने अन्दर निर्विचारिता महसूस करेंगे। अधिकतर लोग निर्विचार चेतना में चले जाते हैं। ये पहला समाधि है जिसे निर्विचार समाधि कहते हैं। इसी घटना के साथ आप देखें की आप किसी की भी कुण्डलिनी उठा सकते हैं। अभी आप पार नहीं हुए लेकिन जब आप निर्विचार समाधि में चले गये तभी आपमें यह शक्ति आ जाती है कि आप किसी की भी बीमारी भी ठीक कर सकते हैं और थोड़ी बहुत कुण्डलिनी भी उठा सकते हैं। लेकिन आप पार नहीं करा सके। लेकिन जब ये कुण्डलिनी इसे छेद देती है जो कि सहस्रार है जो कि 1000 नाडियों से बंधा है उसको छेद करके तालू से जो कुण्डलिनी निकलती है तब वे अति सूक्ष्म सर्वव्यापी शक्ति में एकाकार होती हैं। उस वक्त और उसके हाथों से हृदय का स्पन्दन शुरू हो जाता है क्योंकि जो सदा शिव का

स्थान है वो हमारे सर में है और वही शिव हमारे हृदय में बसे है। जैसे ही वहाँ प्रकाश होता है वैसे ही हृदय से आत्मा का प्रकाश हमारे अन्दर बहने लग जाता है और परा-अनुकम्पी नाड़ी तन्त्र को हम नियन्त्रित कर लेते हैं। एक दम आपको लगता है सर से ठंडी-ठंडी हवा आ रही है और हाथों से भी ठंडी-ठंडी हवा आ रही है। इस चक्र का खुलना बहुत जरूरी है जब तक ये चक्र नहीं खुलता, जब तक सहस्रार को कुण्डलिनी नहीं छेदती तब तक आप पार नहीं हो सकते। अब इसके लिये आप कहें कि माँ हम क्यों नहीं पार हो सकते? हम कोई भी कड़ी बात आपसे नहीं कहना चाहते। इतना ही कहेंगे कि बेटा आपमें ये चक्र खराब है। वो ठीक हो सकते हैं। आपको इसकी चिन्ता नहीं करनी चाहिये। अपने पापों तथा गलतियों के बारे सोचने की जरूरत नहीं है। ये सब चीज छूट जाती है क्योंकि पाप पुण्य भी आप अपने अहं से करते हैं। अहं और प्रति अहं के इस प्रकार हट जाने पर आप बिल्कुल बदल जते हैं। आप जो थे वो अब आप रहते नहीं। आप आत्मा हो जाते हैं। आप आत्मा की आँख से देखने लग जाते हैं। जब तक आप पानी में हैं आपको डूबने का डर लगता रहता है। पर नाव पर सवार होकर आप पानी को देखते रहते हैं। पर इस बीच की जो स्थिति होती है कि जब तक ऊपर चढ़ जाएं और वहाँ स्थिर हो जाए यहीं स्थिति जरा नाजुक होती है। सहजयोग पाने के बाद भी आपको थोड़ा सा स्थिर होना पड़ेगा। सहजयोग में पहले दिन बहुत जोर से कुण्डलिनी काम करती है। बहुत लोगों को पहला अनुभव इतने जोर का होता है कि वे आश्चर्य करते हैं लेकिन इसके बाद भी कुण्डलिनी जागृत होती है। आपके अन्दर की कुण्डलिनी हमें पहचानती है। उन्माद से, आवेग से और खुशी के मारे हमें देखते ही वह उछल पड़ती है और बाहर आ जाती है। आप को अनुभव हो जाता है। लेकिन इस अनुभव की स्थिरता इसलिये नहीं टिकती क्योंकि आप में अनेक दोष हैं। जैसे बाढ़ आकर नदी आगे बढ़ जाती है और उसके अन्दर के गड्ढे भरने लगते हैं उसी प्रकार कुण्डलिनी आपके अनेक रोग, तकलीफों को ठीक करने लगती है। एक बार अनुभव होने के बाद इसे संजोना पड़ता है। जैसे बीज अंकुरित हो भी जाए तो भी उसे संजोना पड़ता है। अब आप सोचिए कि बीज का अंकुर इतनी सख्त जमीन में से कैसे फूट कर निकलता है। पर बाहर आने पर उसे सम्भालना पड़ता है। इसी प्रकार अपने आत्म साक्षात्कार को बहुत सम्भालना पड़ता है। यह जागृती बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसे आप पाएं और इसका आनन्द उठाएं। भाषण सुनकर चले जाने का कोई लाभ नहीं। आप सबको अनन्त आर्शावाद।